वैष्णव भक्ति नाट्य परंपरा में लोक नाट्य 'बिदापत' :अध्ययन और विश्लेषण

प्रस्तावना :

बिदापत बिहार का लोक नाट्य है जिसका प्रदर्शन मुख्यतया उत्तरी बिहार के पूर्णिया , अररिया जिले तथा नेपाल के मधेस अंचलों में होता है। मध्यकालीन वैष्णव भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि में इसका स्वरूप सामने आता है। परंतु प्रस्तुतीकरण और शेली की दृष्टि से इसका संबंध विदाओंत तथा प्राचीन नाट्य रासक से जुड़ा है, जो कृष्ण विषयक रंगमंच भक्तिकाल की देन है। इस नाट्य या रंगमंच ने जिस परंपरा में अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया वो बहुत ही प्राचीन तथा महत्वपूर्ण है।

मध्यकाल में भक्तिकाल के संतों नें नाट्यकला को महत्वपूर्ण सामाजिक चेतना के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। इस काल में अधिकांश नाट्य रूपों का गहरा सामाजिक सरोकार था। 15 वीं शताब्दी तक भक्ति आंदोलन का प्रसार उत्तर और पूर्व भारत में हो चुका था। भक्तिकाल में कृष्ण और राम के चरित्रों एवं लीलाओं को संवाद नृत्य-गीत तथा अभिनय के द्वारा प्रस्तुत किया गया। मिथिला में विदाओंत जो नाट्य रासक की प्रस्तुति करते आ रहे थे। भक्तिकाल में जयदेव और विद्यापति के भक्तिपरक गीतों के साथ संवाद जोड़कर अभिनय की नई पद्धतियों की शुरुआत हुई , यह नाट्य रूप आज बिदापत के नाम से प्रदर्शित होता है।

बिदापत को विद्यापति के नाम से जोड़कर देखा जाता है अर्थात विद्यापति के नाम के आधार पर बिदापत का नामकरण कर दिया गया। अंशतः सही है क्योंकि बिदापत में विद्यापति के पदावलियों को गाया जाता है। परंतु 11वीं शती में ज्योतीश्वर ठाकुर के द्वारा रचित 'वर्णरत्नाकर' के 'राज्यवर्णना' से स्पष्ट है की विदाओंत घाघरा पहनकर गीत , नृत्य ,वाद्य और ताल के साथ प्रदर्शन करते थे।

एक पक्ष यह भी सामने आता है की 1808 में फ्रांसिस बुकानन ने पूर्णिया वृतांत में जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग में गीतगोविंद की अभिनय परंपरा के उल्लेख किया है। ध्यान देने योग्य है की जयदेव का रचनाकाल विद्यापति से 200 वर्ष पूर्व का है। अतः इसके नामकरण को लेकर प्रश्न उठता है।

नाट्य सरंचना और अभिनय पद्धति के लिहाज से यह अंकीया , जात्रा और कीर्तनियाँ से साम्य रखता है। नाटक के प्रारम्भ में प्रस्तावना , वंदना और अंत में मंगलगान होता है, जो इस परंपरा का संबंध

पुरातन नाट्य रासक से स्थापित करता है । इन सभी वैष्णव नाट्य परम्पराओं के साथ बिदापत का क्या अन्तः संबंध है को विश्लेषित करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है ।

प्रस्तावित विषय से संबन्धित शोध कार्य :

बिदापत का सर्वप्रथम उल्लेख 11वीं सदी में ज्योतिरीश्वर ठाकुर के 'वर्णरत्नाकर' में मिलता है। तत्पश्चात 1808 में फ्रांसिस बुकानन ' अकाउंट ऑफ पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट ' में इसका वर्णन करते है । साप्ताहिक विश्वमित्र के 1 अगस्त 1945 के अंक में फणीश्वर नाथ रेणु के संस्मरण के रूप में बिदापत का उल्लेख मिलता है । तत्पश्चात नाट्यविद जगदीशचंद्र माथुर द्वारा 1960 में पूर्णिया जिले के झिरवा गाँव में प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु के सहयोग से 'पारिजातहरण' के कुछ अंशों की रिकॉर्डिंग (ऑडियो) की गयी थी । 2007 में ओमप्रकाश भारती द्वारा लिखित पुस्तक ' बिहार के पारंपरिक नाट्य 'में इसका वर्णन मिलता है ।

विषय की उपादेयता :

बिदापत पूर्वाञ्चल भारत के नाट्य रूपों में सर्वाधिक प्राचीन है । फिर भी बिदापत को वो ख्याति प्राप्त नहीं हुई जो अंकीया नाट , जात्रा आदि को प्राप्त हुई। अपने गीत नृत्य अभिनय शैली में संस्कृत नाट्य परंपरा की विशिष्ट धरोहर है । लगभग एक हज़ार वर्षों से जन चेतना और लोकरंजन का माध्यम रहे बिदापत नाट्य को अनदेखा किया गया । प्रस्तावित शोध का उद्देश्य बिदापत के सम्पूर्ण स्वरूप को सामने लाना है , जिसमें अभिनय , गीत ,नृत्य , रंगशाला पर विस्तृत वर्णन होगा । साथ ही नाट्यसाहित्य के अध्येताओं के लिया मुख्य प्रश्न सामने लाएगा । में रंगमंच का छात्र होने के साथ साथ एक रंगकर्मी भी हूँ अतः भविष्य में रंगमंच की मुख्य धारा में इसका प्रयोग करूंगा ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में मुख्यतः क्षेत्र सर्वेक्षण व विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा

तथ्य संकलन

प्राथमिक स्रोत -

अवलोकन विधि (observation)

साक्षात्कार (Interview)

प्रश्नावली विधि (Questionnaire) आदि।

द्वितीयक स्रोत -

विषय से संबन्धित प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाओं के आलेख, वीडियो तथा अन्य **स्रोतों** का अध्ययन।

प्रस्तावित अध्याय-

अध्याय -1 वैष्णव भक्ति और नाट्य परंपरा

1.1 भक्ति आंदोलन

1.2 वैष्णव भक्ति

1.3 वैष्णव नाट्य परंपरा

अध्याय -2 लोकनाट्य बिदापत- उद्भव, विकास एवं नामकरण

2.1 बिदापत के उद्भव क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

2.2 मिथिला में लोकनाट्य की परंपरा

2.3 बिदापत का उपजीव्य गीतगोविंद तथा विद्यापति :

2.4 बिदापत का नामकरण

2.5 बिदापत उद्भव और विकास -

अध्याय-3 बिदापत का कृतित्व पक्ष

3.1 कृतिव पक्ष कि अवधारणा

3.2 लोकनाट्यों का कथानक

3.3 बिदापत के कथानकों का तात्विक विश्लेषण

3.4 बिदापत के कथानक और उनका मूल स्रोत

3.5 बिदापत के कथानक का मूल अंश

3.6 बिदापत के कथानक का अनुवाद

अध्याय -4 बिदापत रंगशिल्प एवं रंगशाला

4.1 रंगशिल्प कि अवधारणा

4.2 रंगमंडली तथा निर्देशक

4.3 प्रदर्शन शैली और मंच व्यवस्था

4.4 अभिनय

4.5 वेषभूषा और रूपसज्जा

4.6 गीत, नृत्य और वाद्य

4.7 बिदापत का दर्शक

अध्याय -5 बिदापत नाच का वैष्णव भक्तिकालीन अन्य नाट्य परम्पराओं के साथ अंत:संबंध का शोधपरक मूल्यांकन (उपसंहार)

- **उपसंहार**

संदर्भ सूची

1. माथुर, जगदीशचन्द्र : परम्पराशील नाट्य, 2006, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
2. दुबे, श्यामसुन्दर : लोक परम्परा, पहचान एवं प्रवाह, 2003, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड , जगतपुरी दिल्ली।
3. वात्स्यायन, कपिला : पारंपरिक भारतीय रंगमंच अनंत धाराएं, 1995, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली।
4. भारती , ओमप्रकाश : बिहार के पारंपरिक नाट्य ,2007, ,उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद।
5. मिश्र ,शिवकुमार : भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य ,2005,अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. जैन , नेमिचन्द्र : रंग परंपरा , 1996 , वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
7. ओझा , दशरथ :हिन्दी नाटक :उद्भव और विकास , 2003,राजपाल एंड संस प्रकाशन दिल्ली।
8. भारती ,ओमप्रकाश :मिथिलाक लोकनाट्य ,1997,भंगिमा।
9. दीक्षित , सुरेन्द्रनाथ :भारत और भारतीय नाट्यकला।
10. अग्रवाल ,राम नारायण : ब्रज का रासरंगमंच।
11. मिश्र , जयकान्त : मैथली साहित्य का इतिहास,1988,साहित्य अकादमी ।
12. सिंह , प्रेमशंकर : मैथली नाटक और रंगमंच।
13. चौधरी , राधाकृष्णन : मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति।
14. भागवत , महेंद्र : लोकनाट्य परंपरा और प्रवतियाँ।
15. परमार,श्याम : लोकधर्मी नाट्य परंपरा
16. कृष्णदास : हमारी नाट्य परंपरा
17. गार्गी ,बलवंत :फोक थियेटर ऑफ इंडिया ,1966,युनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन।
18. रंगाचार्य,आद्य : इंडियन थिएटर,1971,एन .बी.टी।

19.वात्स्यायन ,कपिला :गीत गोविंद ,1998,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
20.माथुर ,जगदीशचन्द्र,दशरथ ओझा : प्राचीन भाषा नाटक संग्रह
21.Choudhary ,p.c roy ,1976,NBT.

पत्रिकाएँ

1. लोकधर्मी नाट्य परंपरा – बिदापत (रंग अभियान , अंक 4 – आलेख – प्रफुल कुमार सिंह)
2. बिदापत – आलेख – डॉ ओमप्रकाश भारती (भंगिमा , मैथली नाटक विशेषांक दिसंबर 2005)
3. पारिजातहरण (उमापति) – ग्रियर्सन,दी जर्नल ऑफ दी बिहार रिसर्च सोसाईटी –मार्च –जून ,1947
4. नाट्य – भारती , अंक – 2 , त्रैमासिक वर्ष -1992 संपादक ओमप्रकाश भारती।